Emerging Trends in Education [Vol. VI - No. 1. August 2015. pp 70-77]

"सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय व निजी विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. अख्तर बानो*

किसी भी देश का भविष्य और लोकतंत्र की सफलता देश की जनता की शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है। देश की शैक्षिक स्थिति सुधारने और जागरूकता लाने का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। उसे हमारे समाज का कर्णधार माना जाता है। जिस प्रकार माली अपने पौधों की समय–समय पर देखभाल करता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी अपने शिक्षार्थियों की समय–समय पर देखभाल करता है। और उनकी उपलब्धि का पता लगाने की कोशिश करता है। विद्यार्थियों की उपलब्धियों को जानने के लिए वह मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाता है। मूल्यांकन ही एक ऐसी प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली को प्रभावित करती है। इसी के आधार पर बालक और अध्यापक के अध्ययन और अध्यापन की प्रणाली निर्भर करती है। विविध प्रकार की परीक्षाएँ तथा परीक्षण मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रकार हैं जिसके द्वारा अर्जित ज्ञान तथा संशोधित व्यवहार का मूल्यांकन होता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

राव एवं राव (2004) राव (2010) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि मूल्यांकन प्रक्रिया पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रशिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा उनकी मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार आया।

भट्टाचार्य (2002) ने अपने अध्ययन में विद्यालयों में सह–शैक्षिक गतिविधियों के प्रभाव व मूल्यांकन के लिए ली जाने वाली प्रक्रिया को देखा इसमें यह पाया कि सह–शैक्षिक गतिविधियों को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि वह बालक के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

पाण्डे, (2005) ने अपने शोध में विद्यालयों में लिखित प्रारूप एवं प्रायोगिक मूल्यांकन प्रणाली के बीच संबंधों का समालोचनात्मक अध्ययन किया जिसमें प्रमाणिक मूल्यांकन प्रणाली एवं विद्यालयों में चल रही मूल्यांकन प्रणाली में सार्थक अन्तर पाया गया।

पूजा (2011) एवं प्रकाश (2013) ने सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण व जागरूकता का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि ज्यादातर शिक्षकों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति जागरूकता नहीं है। सरकारी प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

* व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय, (सीटीई), उदयपुर (राजस्थान)।

अभी तक जितने भी अध्ययन हुए है उनमें किसी के द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति को देखने का प्रयास नहीं किया गया है। अतः ज्ञान के इस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए यहाँ पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों व निजी विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन करना।
2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन करना।
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति की तुलना करना।

परिकल्पना

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालय व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का प्रतिदर्श

उदयपुर जिले में स्थित निजी विद्यालय (सी.बी.एस.ई. आधारित) तथा केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा IX में पढ़ाने वाले शिक्षकों का चयन सोद्देश्य चयन विधि द्वारा किया गया। 20 निजी विद्यालयों के तथा 20 केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को चुना गया।

इस अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए अध्यापकों हेतु स्वनिर्मित मानसिक दबाव प्रमापनी बनाई गई, जिसमें कुल 38 पद थे।

इस शोध में अध्यापकों का जो मानसिक दबाव देखा जा रहा है वह निम्नांकित चार आधारों पर देखा गया – विद्यालय सम्बन्धी मानसिक दबाव, प्रायोजना कार्य सम्बन्धी मानसिक दबाव, मानव व्यवहार सम्बन्धी मानसिक दबाव तथा मूल्यांकन सम्बन्धी मानसिक दबाव।

परिणाम व व्याख्या

आँकड़ों के संग्रहण एवं पश्चात् उनके साथ गणितीय संक्रिया करने के पश्चात् निम्न परिणाम प्राप्त हुए। प्रस्तुत शोध में आँकड़ों का विश्लेषण दो प्रकार से किया गया। मध्यमान के आधार पर तथा कथनवार जिसका वर्णन निम्नानुसार किया जा रहा है –

सारणी संख्या–1 सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों के समस्त शिक्षकों **(N=20)** की मानसिक दबाव की स्थिति का मध्यमान के आधार पर क्षेत्रवार विश्लेषणात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	कथनों की संख्या	कट पॉईंट मध्यमान	वास्तविक मध्यमान	मानक विचलन
1	विद्यालय सम्बन्धी दबाव	12	12×3=36	39.40	4.99
2	प्रायोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	11	11×3= 33	35.60	3.98
3	मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	8	8×3= 24	26.55	3.12
4	मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	7	7×3= 21	23.35	2.51
	कुल दबाव	**38**	**38×3= 114**	**124.90**	**11.85**

आरेख संख्या–1

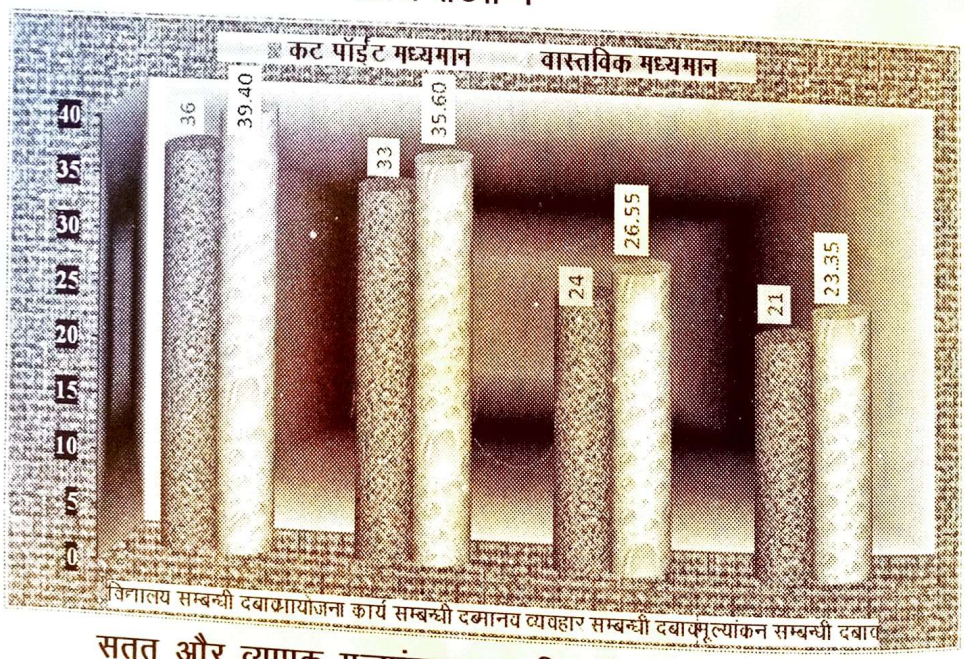

सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों पर क्षेत्रवार मानसिक दबाव (N=20)

समग्र रूप में विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी एवं आरेख–1 का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों मानसिक दबाव का मध्यमान 124.90 प्राप्त हुआ, जबकि इस क्षेत्र का कट पॉईंट मध्यमान 114 है। इस प्रकार वास्तविक मध्यमान कट पॉईंट मध्यमान से 10.90 अधिक तो है, परन्तु यह आधिक्य के मानक विचलन 11.85 से थोड़ा कम होने से यह कहा जा सकता है कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को मानसिक दबाव प्रभावित तो कर रहा है, परन्तु केवल साधारण मात्रा में ही, जो कि इतना उल्लेखनीय नहीं है।

सारणी संख्या–2 सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी विद्यालयों के समस्त शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का मध्यमान के आधार पर क्षेत्रवार विश्लेषणात्मक अध्ययन (N=20)

क्र. सं.	क्षेत्र	कथनों की संख्या	कट पॉईंट मध्यमान	वास्तविक मध्यमान	मानक विचलन
1	विद्यालय सम्बन्धी दबाव	12	12×3= 36	43.95	5.78
2	प्रायोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	11	11×3= 33	35.60	5.42
3	मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	8	8×3= 24	29.05	3.43
4	मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	7	7×3= 21	25.95	3.64
कुल दबाव		**38**	**38×3= 114**	**138.45**	**16.93**

आरेख संख्या–2

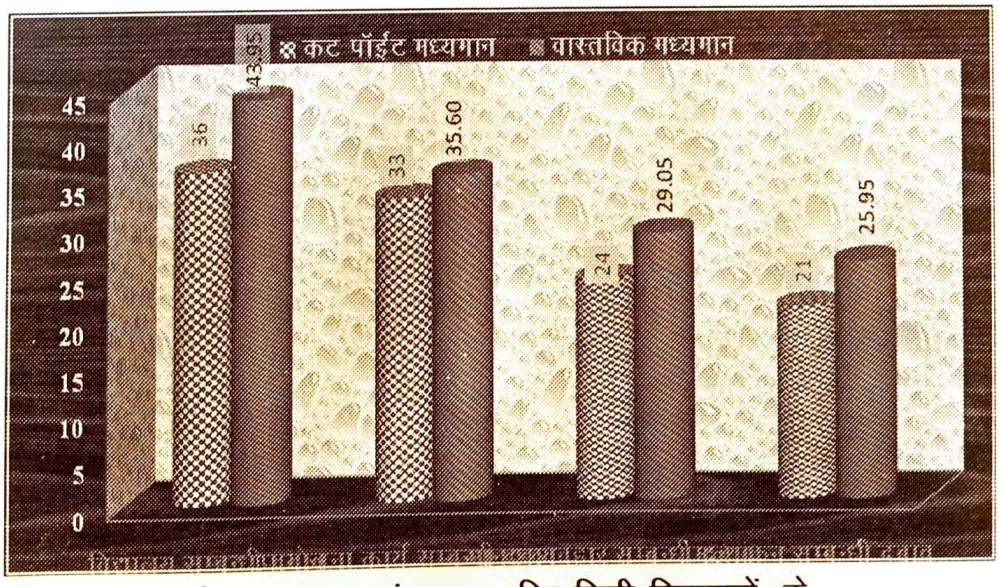

सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी विद्यालयों के समस्त शिक्षकोंपर क्षेत्रवार मानसिक दबाव (N=20)

समग्र रूप में विश्लेषण एवं व्याख्या:

सारणी एवं आरेख संख्या–2 का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक दबाव का मध्यमान 138.45 प्राप्त हुआ, जबकि इस क्षेत्र का कट पॉईंट मध्यमान 114 है। इस प्रकार वास्तविक मध्यमान कट पॉईंट मध्यमान से 24.45 अधिक है, और यह आधिक्य मानक विचलन 16.93 से कहीं अधिक है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि सतत् और व्यापक मूल्यांकन के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों के शिक्षकों को समग्र रूप में मानसिक दबाव काफी प्रभावित कर रहा है।

सारणी संख्या–3 सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन (df= 38)

क्षेत्र	न्यादर्श (20)	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
विद्यालय सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	39.40	4.99	2.66*
	निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	43.95	5.78	
प्रायोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	35.60	3.97	2.59*
	निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	39.50	5.42	
मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	26.55	3.12	2.41*
	निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	29.05	3.43	
मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	23.35	4.99	2.66*
	निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	25.95	5.78	

* .05स्तर पर सार्थक

आरेख संख्या–3

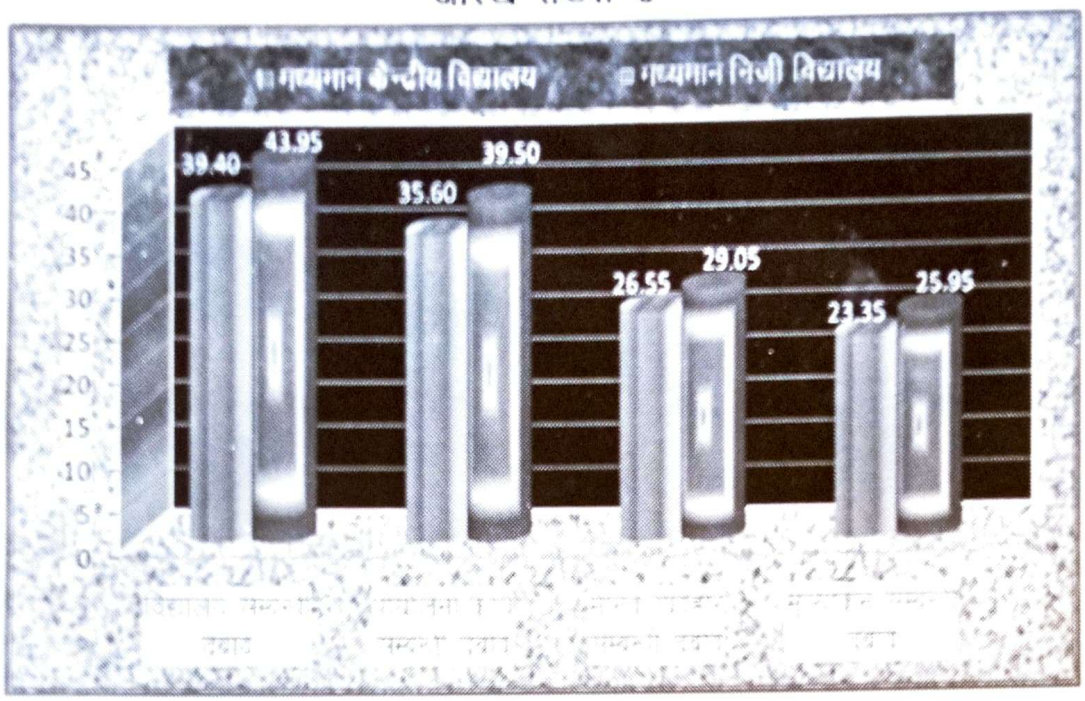

सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या:

सारणी एवं आरेख संख्या–3 से स्पष्ट है कि केन्द्रीय विद्यालय व निजी विद्यालय के क्षेत्रवार मानसिक दबाव देखने पर यह पता चलता है कि दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक दबाव में सार्थक अन्तर है। सारणी के आधार पर हम कह सकते हैं कि निजी विद्यालयों के शिक्षको पर अधिक मानसिक दबाव बना हुआ है।

सारणी संख्या–4 सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक दबाव की तुलना (df= 38)।

न्यादर्श (20)	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	'टी' मान
केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षक (20)	124.90	11.84	13.55	2.93**
CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षक(20)	138.45	16.93		

** .01 स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी संख्या–4 से स्पष्ट है कि समग्र रूप से मानसिक दबाव के सन्दर्भ में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों तथा CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः 124.90 एवं 138.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.84 एवं 16.93 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.93 प्राप्त हुआ, जो .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.70 से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के प्रति केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक दबाव में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः 99 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि समग्र रूप में CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर अधिक मानसिक दबाव है।

निष्कर्ष व शैक्षिक निहितार्थ :

शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि जिस उद्देश्य से सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को लागू किया गया है वह उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाया है। शिक्षकों में अभी भी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को लेकर अस्पष्टता बनी हुई है तथा शिक्षक पूर्ण रूप से उसको नहीं समझ पा रहे हैं। वह मूल्यांकन की इस प्रक्रिया को एक बोझ के रूप में लेते है, क्योंकि उनका मानना है कि बार–बार लिए जाने वाले टेस्ट व टास्क व लिखित कार्यों ने कार्य की अधिकता को इतना बढ़ा दिया है कि अध्यापक समय की कमी महसूस करते हैं। उनका मानना है कि कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या इतनी अधिक होती है कि प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान दे पाना सम्भव नहीं हो पाता है और ना ही उनकी गतिविधियों का मूल्यांकन उचित प्रकार से हो पाता है। अतः मूल्यांकन प्रणाली में थोड़ा बदलाव लाकर हम इसे बेहतर बना सकते हैं। सर्वप्रथम शिक्षकों को इसे समझना होगा तभी वह आगे विद्यार्थियों व अभिभावकों तक सही मूल्यांकन की प्रक्रिया को पहुँचा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम निम्न चीज़ों को विद्यालयों में अपनायें :–

1. विद्यालयों में इंटरनेट की व्यवस्था की जाये जिससे विद्यार्थी विद्यालयों में ही प्रोजेक्ट कार्य को पूर्ण कर सकें।
2. प्रोजेक्ट विद्यार्थियों की रूचि के अनुरूप दिया जाये, जिसे विद्यार्थी स्वयं पूर्ण कर सकें।
3. कक्षा में समूह गतिविधियाँ अधिक से अधिक करवाई जायें जिससे विद्यार्थी उसमें खुलकर भाग ले सकें।
4. रचनात्मक आकलन तथा योगात्मक आकलन के बीच अंतराल रखा जाये जिससे विद्यार्थी दोनों आकलन की तैयारी उचित प्रकार से कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- गुप्ता, वेदप्रकाश. (2012): वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखना–सिखाना एवं मूल्यांकन, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर 2012, पृ. सं. 20 व 21.
- गोपाल कृष्णन, एन. (1993): मानसिक स्वास्थ्य और आप, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, पृ. सं0 67–71.
- जलालुद्दीन, ए.के. (2011) रटन्त से अर्थ निर्माण तक– पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र, और मूल्यांकन में फेरबदल'', शिक्षा विमर्श, वर्ष 13 / अंक–2 / मार्च–अप्रैल, पेज नं. 21–31.
- जोशी, भारती. (2010): देश के भावी कर्णधारों पर कहर ढहाती आज की परीक्षा प्रणाली. प्रौढ़ शिक्षा, अगस्त, पृ. 33–35
- दीवान, हृदयकान्त (2012) ''आकलन का वर्तमान चक्रव्यूह'', जयपुर : शिक्षा विमर्श, वर्ष 14 / अंक 3 / मई–जून / पेज नं. 16–22.
- पाण्डेय, रामशक्ल. (2003): शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 210–221.
- बापना, उषा. (2013): व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन कार्यक्रम के बढ़ते कदम, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर, पृ.सं. 19–21.
- भटनागर, सुरेश. (1985): शिक्षा मनोविज्ञान, लायल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 316–331.
- रस्तोगी, गोपाल कृष्ण. (1995): शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, पृ.सं. 97
- शर्मा, एन.के. (2009): शिक्षा में मापन मूल्यांकन एवं निर्देशन, के.एस.के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.सं. 97
- सिंह, गोविन्द एवं प्रियंका पारीक. (2012): गुरू शिष्य सम्बन्धों की पुनर्स्थापना में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, शिविरा पत्रिका, पृ.सं. 18–19.
- सिंह, गोविन्द, जितेन्द्र. (2012): सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना, नया शिक्षक, अक्टूबर–दिसम्बर 2012, पृष्ठ 17–25.
- सिन्हा, जे.सी. (2005): शिक्षण अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार, अपोलो प्रकाशन, पिंक सिटी मार्केट, राजापार्क, जयपुर।